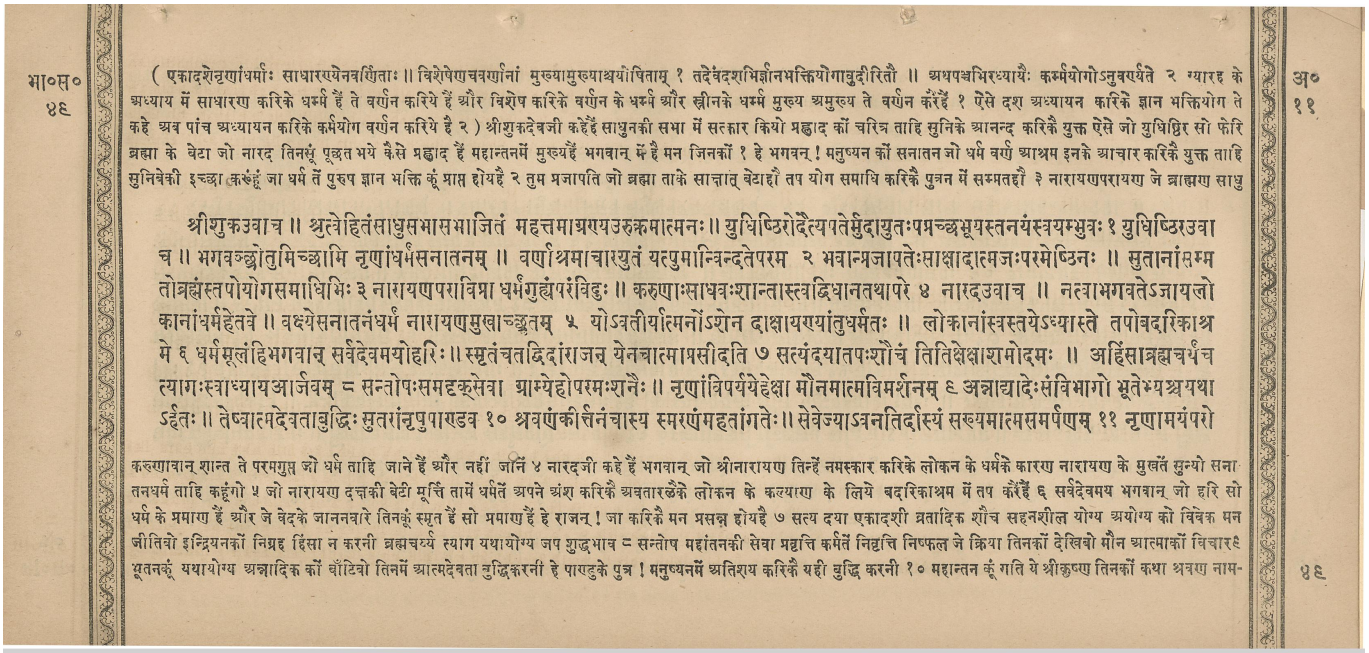

भा०स्क० ४६

(एकादशेनृणांधर्माः साधारण्येनवर्णिताः ॥ विशेषेणचवर्णानां मुख्यामुख्याश्रयोंपिताम् १ तदेवंदशभिर्ज्ञानभक्तियोगावुदीरितौ ॥ अथपञ्चभिरध्यायैः कर्म्मयोगोऽनुवर्ण्यते २ ग्यारह के अध्याय में साधारण करिके धर्म्म हैं ते वर्णन करिये हैं और विशेष करिके वर्णन के धर्म्म और स्त्रीनके धर्म्म मुख्य अमुख्य ते वर्णन करैहैं १ ऐसे दश अध्यायन करिके ज्ञान भक्तियोग ते कहे अब पांच अध्यायन करिके कर्मयोग वर्णन करिये है २) श्रीशुकदेवजी कहैहैं साधुनकी सभा में सत्कार कियो प्रह्लाद कों चरित्र ताहि सुनिके आनन्द करिकै युक्त ऐसे जो युधिष्ठिर सो फेरि ब्रह्मा के बेटा जो नारद तिनसूं पूछत भये कैसे प्रह्लाद हैं महान्तनमें मुख्यहैं भगवान् में है मन जिनकों १ हे भगवन् ! मनुष्यन कों सनातन जो धर्म वर्ण आश्रम इनके आचार करिकै युक्त ताहि सुनिवेकी इच्छा करूंहूं जा धर्म तें पुरुष ज्ञान भक्ति कूं प्राप्त होयहै २ तुम प्रजापति जो ब्रह्मा ताके साक्षात् बेटाहौ तप योग समाधि करिकै पुत्रन में सम्मतहौ ३ नारायणपरायण जे ब्राह्मण साधु

श्रीशुकउवाच ॥ श्रुत्वेहितंसाधुसभासभाजितं महत्तमाग्र्यउरुक्रमात्मनः ॥ युधिष्ठिरोदैत्यपतेर्मुदायुतःपप्रच्छभूयस्तनयंस्वयम्भुवः १ युधिष्ठिरउवाच ॥ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि नृणांधर्मंसनातनम् ॥ वर्णाश्रमाचारयुतं यत्पुमान्विन्दतेपरम २ भवान्प्रजापतेःसाक्षादात्मजःपरमेष्ठिनः ॥ सुतानांसम्मतोब्रह्मंस्तपोयोगसमाधिभिः ३ नारायणपराविप्रा धर्मंगुह्यंपरंविदुः ॥ करुणाःसाधवःशान्तास्त्वद्विधानतथापरे ४ नारदउवाच ॥ नत्वाभगवतेऽजायलोकानांधर्महेतवे ॥ वक्ष्येसनातनंधर्मं नारायणमुखाच्छ्रुतम् ५ योऽवतीर्यात्मनोंऽशेन दाक्षायण्यांतुधर्मतः ॥ लोकानांस्वस्तयेऽध्यास्ते तपोबदरिकाश्रमे ६ धर्मंमूलंहिभगवान् सर्वदेवमयोहरिः ॥ स्मृतंचतद्विदांराजन् येनचात्मापसीदति ७ सत्यंदयातपःशौचं तितिक्षेक्षाशमोदमः ॥ अहिंसाब्रह्मचर्यंच त्यागःस्वाध्यायआर्जवम् ८ सन्तोषःसमदृक्सेवा ग्राम्येहोपरमःशनैः ॥ नृणांविपर्ययेहेक्षा मौनमात्मविमर्शनम् ९ अन्नाद्यादेःसंविभागो भूतेभ्यश्चयथार्हतः ॥ तेष्वात्मदेवताबुद्धिः सुतरांनृपुपाण्डव १० श्रवणंकीर्त्तनंचास्य स्मरणंमहतांगतेः ॥ सेवेज्याऽवनतिर्दास्यं सख्यमात्मसमर्पणम् ११ नृणामयंपरो

करुणावान् शान्त ते परमगुप्त जो धर्म ताहि जाने हैं और नहीं जानें ४ नारदजी कहे हैं भगवान् जो श्रीनारायण तिन्हें नमस्कार करिके लोकन के धर्मके कारण नारायण के मुखतें सुन्यो सनातनधर्म ताहि कहूंगो ५ जो नारायण दक्षकी बेटी मूर्त्ति तामें धर्मतें अपने अंश करिकै अवतारलैकै लोकन के कल्याण के लिये बदरिकाश्रम में तप करैहैं ६ सर्वदेवमय भगवान् जो हरि सो धर्म के प्रमाण हैं और जे वेदके जाननवारे तिनकूं स्मृत हैं सो प्रमाण हैं हे राजन् ! जा करिकै मन प्रसन्न होयहै ७ सत्य दया एकादशी व्रतादिक शौच सहनशील योग्य अयोग्य को विवेक मन जीतिवो इन्द्रियनकों निग्रह हिंसा न करनी ब्रह्मचर्य्य त्याग यथायोग्य जप शुद्धभाव ८ सन्तोष महांतनकी सेवा प्रवृत्ति कर्मतें निवृत्ति निष्फल जे क्रिया तिनकों देखिवो मौन आत्माकों विचार९ भूतनकूं यथायोग्य अन्नादिक कों बाँटिवो तिनमें आत्मदेवता बुद्धिकरनी हे पाण्डुके पुत्र ! मनुष्यनमें अतिशय करिकै यही बुद्धि करनी १० महान्तन कूं गति ये श्रीकृष्ण तिनकों कथा श्रवण नाम-

अ० ११

४६

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
https://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/srimadbhagavatam1900bd7/0057
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG